ऑस्किओला:
यादें एक बंटाईदार की बेटी की

संकलन व सम्पादन: एलन गवनर

चित्र: शेन डब्ल्यू. इवान्स

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ऑस्किओला मेयस् का जन्म 1909 में पूर्वी टैक्सास में हुआ था। वे एक बंटाईदार की बेटी थीं और गुलामों की पोती। वे अपने भयों, अपनी ग़रीबी और प्रियजनों को खोने की अपनी पीड़ा से अपने बचपन की यादों, अपनी माँ और दादी से सुनी-सीखी कहानियों, गीतों और कविताओं के सहारे उबरीं। उनकी मदद से वे बची रहीं। रंग-बिरंगी थेगलियों को जोड़ कर बनाई एक दोहर की तरह, यह संकलन ऑस्किओला के जीवन को एक जीवन्त व सघन पच्चीकारी में तब्दील करता है।

ऑस्किओला दरअसल मार्मिक और सशक्त मौखिक इतिहास है। यह संकलन पाठकों के दिलों को छूने के साथ उनका परिचय गुलामी की विरासत से करवाता है। दक्षिण (अमरीका) में अफ्रीकी-अमरीकियों की पहले जो स्थितियाँ थीं उनसे हमें वाक़िफ़ करवाता है।

ऑस्किओला:
यादें एक बंटाईदार की बेटी की

संकलन व सम्पादन: एलन गवनर
चित्र: शेन डब्ल्यू. इवान्स
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

क्लैरेन्स मेयस् की स्मृति
तथा भावी पीढ़ियों को समर्पित

- ए.जी.

ईश्वर
और मेरे मित्रों केट, टेय और ओलबिया के लिए

- एस.डब्ल्यू.ई.

आभार

इस क़िताब की रचना में मुझे कई लोगों की मदद मिली है। मैं ऑस्किओला मेयस् के प्रति गहरा आभार जताना चाहूँगा, जिन्होंने बेलौस उदारता के साथ अपनी यादें मेरे साथ साझा कीं।

मैं वर्ना रेवन की शुक्रगुज़ार हूँ, जिन्होंने 1983 में मेरा परिचय ऑस्किओला से करवाया था। डॉली टेलर, रैवरैण्ड सी. ए. डब्ल्यू. क्लार्क सीनियर, तथा द गुड स्ट्रीट बैप्टिस्ट चर्च की भी आभारी हूँ जिन्होंने शुरू से ही मेरी कोशिशों में सहयोग दिया। आभार मेरी पत्नी कालेटा डूलिन का, जिन्होंने इस काम के आगे बढ़ने के साथ अपनी अंर्तदृष्टियाँ साझा कीं; मेरी बेटी ब्रीआ का, जिसने इस पुस्तक के कई हिस्सों के पहले पाठ को पूरे ध्यान से सुना और जो अब तक उनकी अमिट छाप की बात करती है; मेरे बेटे एलैक्स का, जिसकी इतिहास के प्रति जिज्ञासा और मायने ने मौखिक शब्दों के महत्व की मेरी समझ को बढ़ाया है।
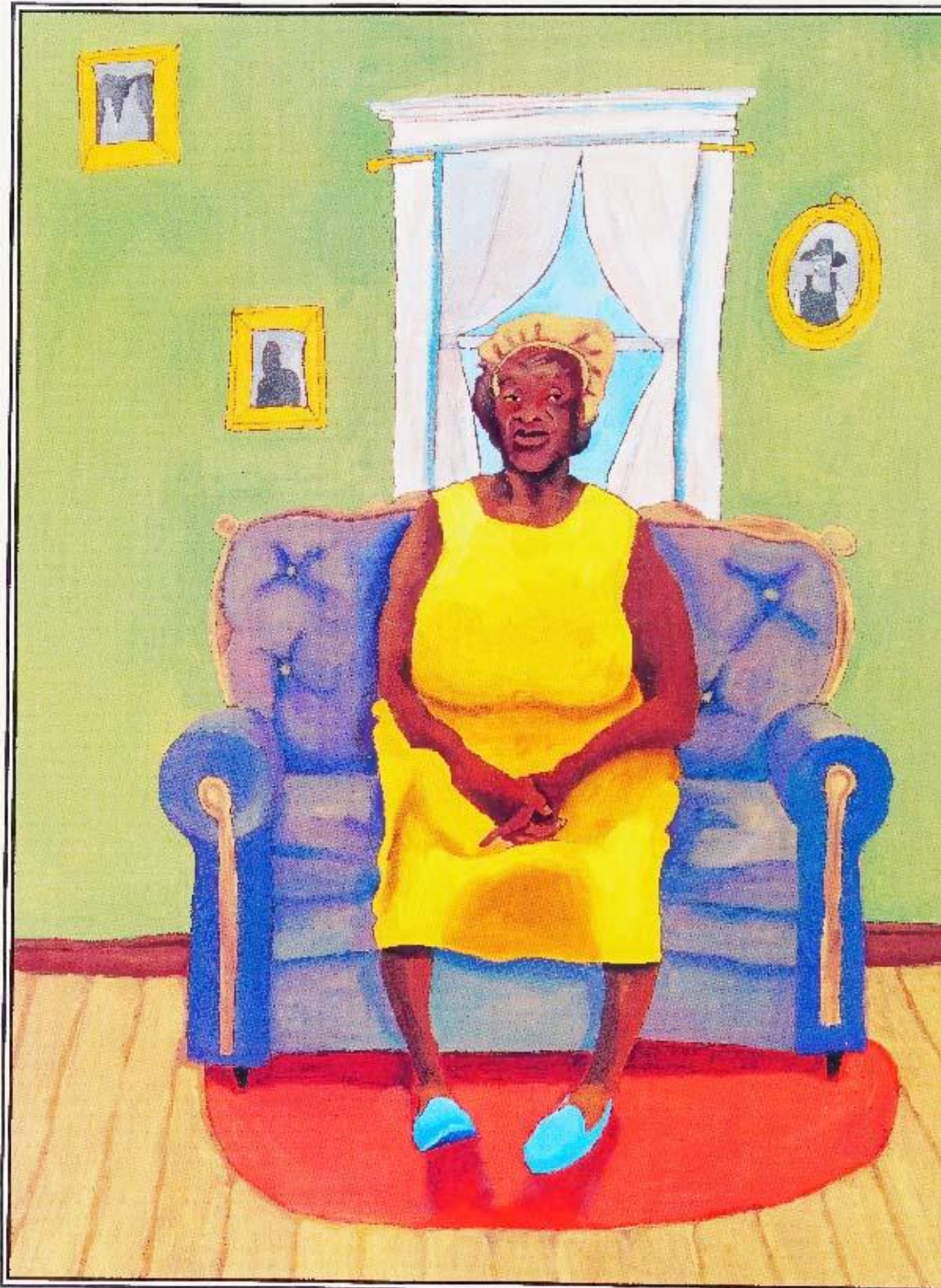
परिचय

ऑस्किओला मेयस्, अपनी बैठक के सोफे पर अकेली बैठी हैं। वे अपनी आँखें ऊपर नचाती-घुमाती हैं और मुस्कुराती हैं। तब गाना शुरू करती हैं। गीत के शब्द उनके दिल से निकली ताल में लयबद्ध हैं। उनका शरीर आगे को झूमता है। उनके स्वर लम्बे और गहरे हैं। वे उस सपाट शैली में निकलते हैं जो उन्होंने अपनी माँ एज़ालिया डगलस और दादी लॉरा वॉकर से सीखी थी। दादी उस वक़्त दस बरस की थीं जब गुलामी को खत्म करने वाले मुक्ति घोषणा पत्र पर दस्तख़त किए गए थे।

उनके पीछे जो खिड़की है उसकी रोशनी में चोरों से बचाव के लिए काँच पर लगे कंटीले तारों की छाया पड़ रही है। "दक्षिण डलास में तमाम लोग दिन-रात सड़कों पर घूमते हैं," ऑस्किओला समझाती हैं। "अब तक कोई ख़ास गड़बड़ नहीं हुई है। पर कुछ साल पहले तक शनिवार की रात को बन्दूकें दागने की आवाज़ें आती थीं। पर पुलिस वालों ने आकर वह बन्द करवा दिया। आजकल मैं सिर्फ देखती और दुआ करती हूँ। अपनी ज़िन्दगी का जो हिस्सा मैंने यहाँ बिताया है, वह मुझे पूर्वी टैक्सास के कस्बे वासकॉम में बिताए समय से बेहतर लगता है, जहाँ मैं पली-बढ़ी थी। पर मुझे ग्रामीण इलाके की कमी ज़रूर खलती है। वहीं मेरा घर जो था।"

ऑस्किओला 1945 में डलास आईं। वे यहाँ छोटे-मोटे काम करती रहीं, दवा की दुकान में, कपड़े धुलाई की लॉन्ड्री में, पर अधिकतर गोरों के घरों में बच्चों की आया की तरह या घरेलू मददगार की तरह। "मेरी ज़िन्दगी कठिन रही है, पर जो कहानियाँ और गीत और कविताएं मैंने बचपन में सीखी थीं, मुझे ताकत देती रहीं। मैं अब भी रात को बिस्तर पर लेट उनके बारे में सोचती हूँ, कभी खुद को ही गाकर सुनाती हूँ।"

यह क़िताब मौखिक इतिहास है, जो ऑस्किओला के साथ पिछले पंद्रह सालों में किए गए साक्षात्कारों और बातचीतों से तैयार हुआ है। ऑस्किओला के ऑडियो टेपों में उनकी जो मौखिक शैली थी उसको बरकरार रखने की मैंने भरसक कोशिश की है। सम्पादन के दौरान भी मैंने ऑस्किओला को जोड़ा, उनके साथ अलग-अलग प्रारूपों की तुलना की, उन पर चर्चा की। यह पुस्तक उनके जीवन के उस हिस्से पर केन्द्रित है जो उन्हें सबसे अधिक याद है, तीन वर्ष की उम्र से हाई स्कूल पूरा करने तक और, तब उनकी शादी और काम करने के शुरुआती सालों तक। ये कथन ऑस्किओला की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का अहम हिस्सा हैं। वे अपने मित्रों और परिवार के साथ, डलास के गुड स्ट्रीट बैप्टिस्ट चर्च के इतवारी स्कूल के छात्रों के साथ, इन्हें सगर्व साझा करती हैं।

पिछले दशक में ऑस्किओला के श्रोता बढ़े हैं। उन्होंने फोक आर्टिस्टस् इन स्कूल्स रेसिडेन्सीस कार्यक्रम में भागीदारी की और डलास फोक फेस्टिवल तथा डलास ब्लैक एकेडमी ऑफ आर्टस् एण्ड लैटरस् व एफ्रिकन-अमेरिकन म्यूज़ियम में प्रदर्शन किए हैं। 1989 में ऑस्किओला ने एक घुमन्तु कार्यक्रम "टैक्सास इन पेरिस" में शिरकत की जिसे मैंने आयोजित किया था। कार्यक्रम फ्लॉरेन्स, इटली में सैन्ट्रो फ्लॉग और पेरिस, फ्रांस में मैज़ों दस कल्चरस् दु मॉन्ड में प्रस्तुत किया गया था।

ऑस्किओला की यादें अफ्रीकी-अमरीकियों की तीन पीढ़ियों के सुख-दुख और मौखिक परंपरा की ताकत को अभिव्यक्त करती हैं। अफ्रीकी संस्कृतियों में इतिहास एक से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से ही पहुँचाया जाता रहा है। परंपरा के सक्रिय वाहक, जिन्हें अक्सर 'ग्रिऑस' कहा जाता है, अपनी कौम की कथाओं को सुना पाने की काबलियत के लिए सम्मान पाते हैं। ऑस्किओला अपनी तरह से एक ग्रिऑस, एक कुलमाता हैं, जिन्होंने अपनी माँ और दादी की विरासत को अंगीकार किया है। जीवन के अनुभवों के माध्यम से इतिहास व्यक्तिगत बन जाता है। अलगाववाद और भेदभाव की कठोर सच्चाइयाँ परिवार और समुदाय की प्राणशक्ति से काटी जा सकती हैं। पुस्तक में दर्ज कथन मौखिक इतिहास और परंपरा को भाषा की सहज शक्ति और प्रेरणा से मिला कर प्रस्तुत करते हैं।

- एलन गवनर
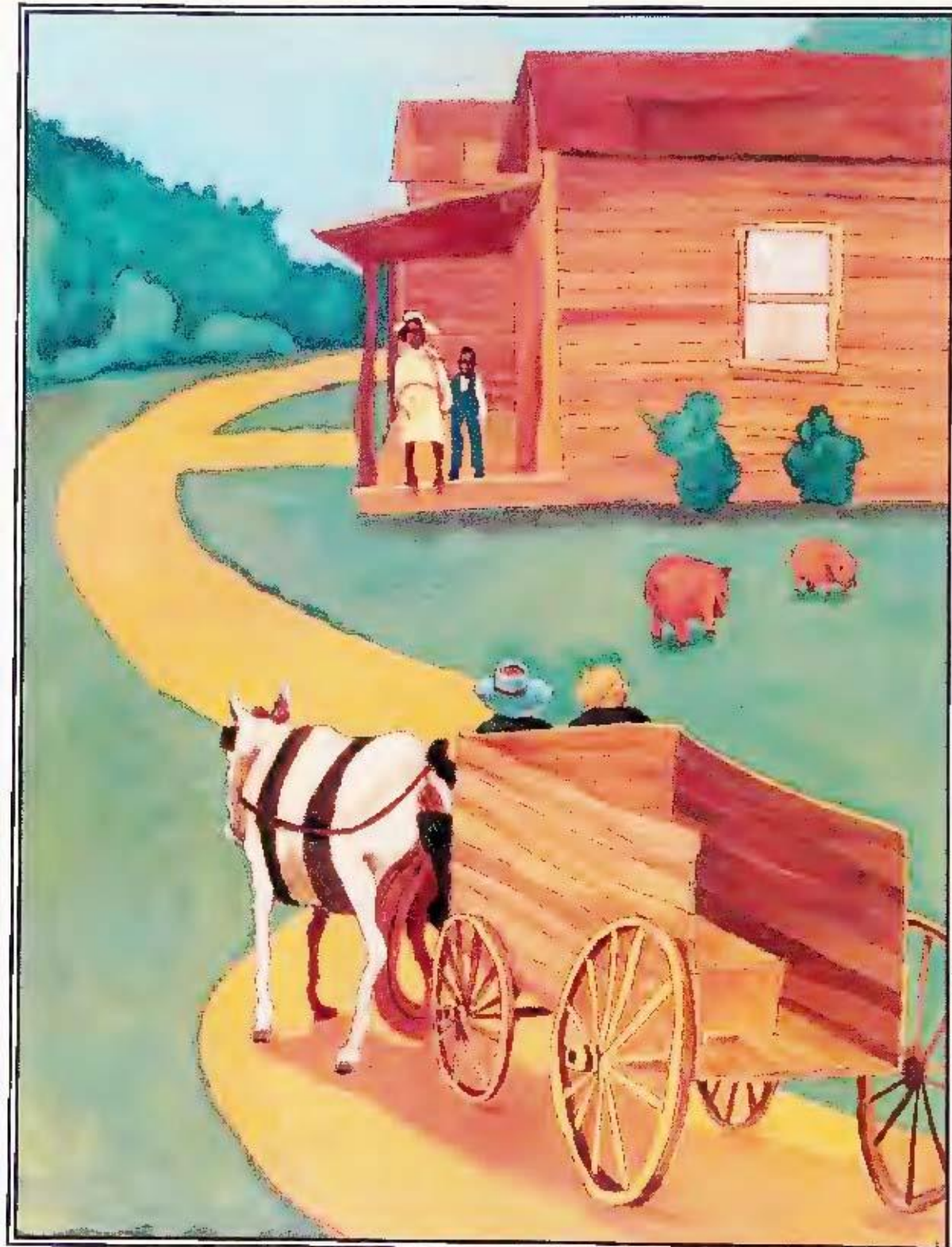
मेरा कस्बा

मेरे घर का रास्ता दरअसल सूअरों के आने-जाने की कच्ची पगडंडी ही थी। मैं मार्शल शहर के बाहर वासकॉम, टैक्सास के देहाती डाक मार्ग में बुधवार 13 दिसम्बर 1909 में पैदा हुई। वासकॉम की आबादी छोटी-सी थी। कस्बे में शायद 250 लोग रहते होंगे। पर हम तो देहाती डाक पथ संख्या एक में रहते थे। उस पथ पर तक़रीबन 135 डाक डब्बे थे। हरेक पर एक संख्या लिखी होती थी, हमारी संख्या 129 थी।

वासकॉम में दो बिसातखाने (जनरल स्टोर) थे, एक छोटा-सा कैफे, एक मेज़-कुर्सी की दुकान, एक कपड़ों की दुकान, एक कपास की ओटनी (कॉटन जिन) और दो डॉक्टरों के दवाखाने थे - हर्बर्ट वान और ओल्डन एबनी।

मैं एक कच्ची सड़क पर रहती थी, जहाँ दूसरे काले लोग रहते थे। गोरे, वासकॉम कस्बे की सरहद में रहते थे। सब कुछ तब अलग-अलग था। हमारे अपने स्कूल, अपने गिरजे थे। हम अलग रहते थे, हम जो कुछ भी करते उस सबमें गोरों से कटे हुए थे।

हम ग़रीब थे। मैंने बचपन में कभी कारें नहीं देखी थीं। डाकिया एक दो-पहिया जुगाड़ में आता था (उस छोटे वाहन में सिर्फ एक के बैठने की जगह थी)। जुगाड़ को एक घोड़ा खींचता था।

हम लकड़ी से बने एक छोटे खस्ताहाल घर में रहते थे। उस पर कोई रंग-रोगन नहीं था, न खिड़कियों पर काँच था, हमारी खिड़कियों पर लकड़ी के पट थे जिन्हें खोला और बन्द किया जा सकता था। हमारा एक सोने का कमरा था, एक रसोई और सामने एक बरामदा। दो बिस्तर थे, एक पर बच्चे सोते थे और दूसरे पर मामा और डैडी। बिजली या चालू पानी का नल नहीं था। हम कुंए से पानी लाते थे या सोते से।

कैसे पड़ा मेरा नाम

जब मैं छोटी बच्ची ही थी, शायद तीन या चार बरस की, एक इन्डियन (अमरीका का मूल निवासी) वासकॉम से गुज़र रहा था। उसने हमारे घर के पास ही अपना तम्बू गाड़ा। मामा और डैडी उसके साथ कॉफी पिया करते थे। वह कभी-कभी मुझे और मेरे भाई को बिस्कुट या मीठी गोलियाँ देता था। मैंने मामा से कहा कि मेरा नाम उसके नाम पर रखा जाए। मामा ने कहा, "नहीं!"

उसने कहा, "कोई बात नहीं, वह मेरा नाम ले सकती है।"

और मैंने अपना नाम ऑस्किओला रख लिया। यह दरअसल उसका नाम था, और मेरा नाम उसके नाम पर रख लिया गया।

उस समय तक वे मुझे, हमारे मुहल्ले की एक गोरी लड़की के नाम पर गारनैल कहा करते थे। वह मिस्टर बी. फॉलसम की बेटी थी। मेरा कयास है कि गोरे लोगों को यह पसन्द था कि काले लोगों के नाम उनके नाम पर रखे जाएं। यह गुलामी के दिनों का चलन था, जब गुलामों को अपने मालिकों के नाम दिए जाते थे।
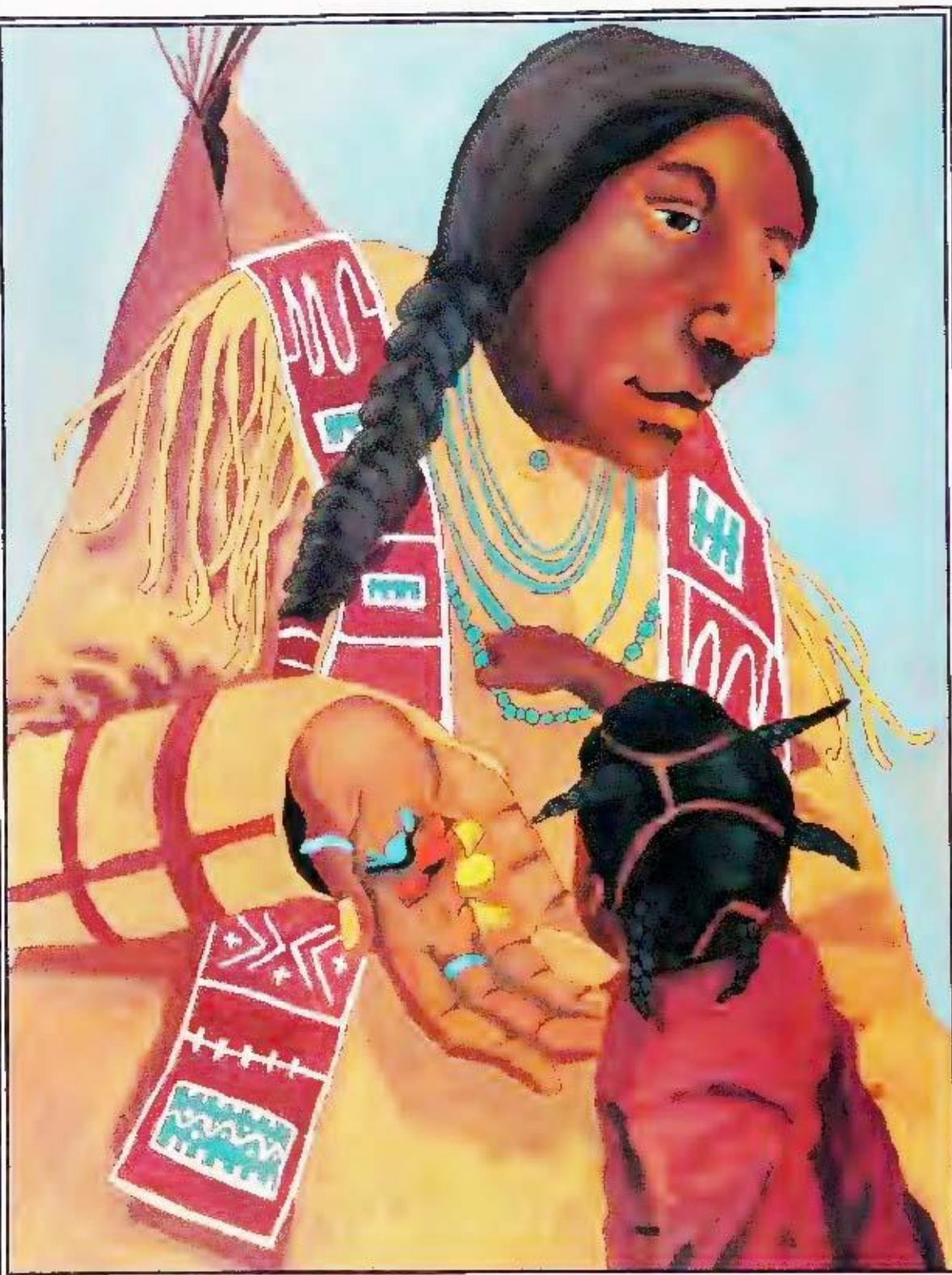
मेरे भाई रैगिनाल्ड का नाम भी एक गोरे आदमी के नाम पर रखा गया था जो हमारे घर के पास ही एक बड़े-से घर में रहता था। मेरे करीबी रिश्तेदारों के तीन बच्चों के नाम भी गोरों के नाम पर रखे गए थे। पर मेरी मामा और डैडी मुझे गारनैल नाम से कम ही बुलाते थे। वे मुझे सिर्फ 'सिस्टर' कह पुकारते थे।

मुझे गारनैल नाम पसन्द नहीं था, मैं ऑस्किओला नाम चाहती थी, उस मेहरबान इन्सान के नाम पर जो मुझे अच्छी चीज़ें देता था। पर तब उसने एक दिन अपना तम्बू उखाड़ा और कहीं और चला गया। मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा, पर उसका नाम मुझे मिला।
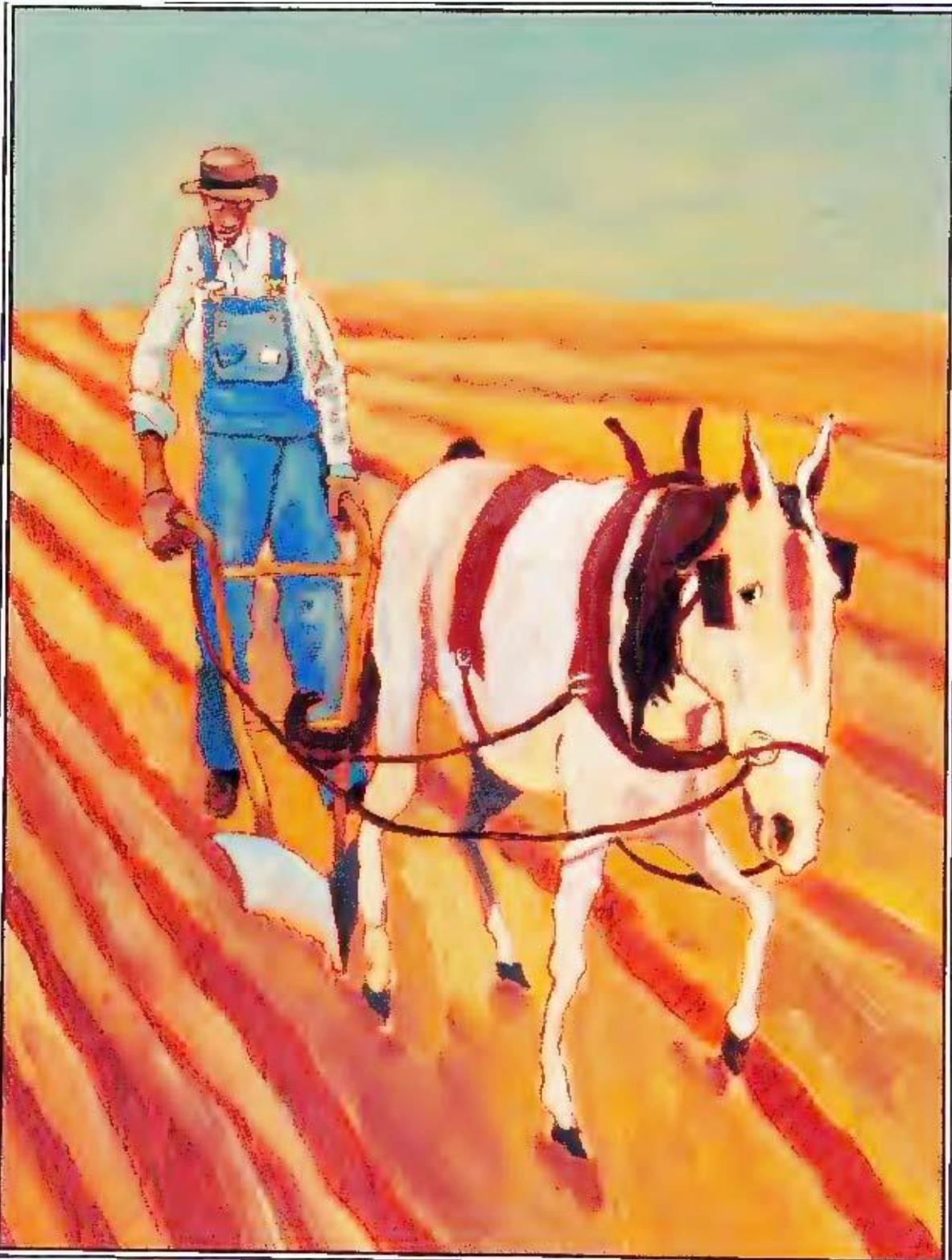
डैडी का काम-धंधा

मेरे डैडी बंटाईदार थे, मतलब वे फ़सल उगाते और उन्हें उस फ़सल को उस गोरे के साथ बाँटना पड़ता जो ज़मीन का मालिक था। वह गोरा मेरे डैडी को एक तिहाई उपज देता और दो तिहाई खुद रख लेता। मेरे डैडी कपास के खेतों में भी कड़ी मशक्कत करते थे। वे ज़मीन को जोतते, खाद देते, बीज बोते और फ़सल तैयार होने तक उसकी देखभाल करते। साथ ही वे गोरों के बागान को भी संभालते।

पर जब फ़सल उग नहीं पाती तो हमारे पास गुज़ारे के लिए कुछ न होता। हमारा एक छोटा-सा सब्ज़ी बागान भी था, जिसमें टमाटर, शकरकन्दी, शिमला मिर्च, पत्तागोभी और सेम उगती थी। सर्दियों में हम गोरे की गायों को दुहते और वह हमें कुछ दूध रख लेने देता।

मैंने अपने डैडी के पास कभी पैसे नहीं देखे। बॉस मैन (निरीक्षक) कभी उन्हें वे सिक्के देता जो 'ब्रोज़ीन' कहलाते थे और पैसे के समान होते थे। डैडी, बॉस मैन की दुकान से परिवार के लिए सौदा खरीदने में उनका इस्तेमाल कर सकते थे। ब्रोज़ीन डाइम (दस सेंट), क्वार्टर (पच्चीस सेंट), निकल (पाँच सेंट) जैसे ही होते थे। पर वे असली सिक्के नहीं धातु के टुकड़े होते थे, वज़न में हल्के। असली पैसे देखने की मुझे कोई याद नहीं है।

गोरा आदमी डैडी को एक जोड़ी जूता भी देता ताकि वे अच्छे से काम कर सकें और सर्दियों में कपड़े भी। पर डैडी को हमारे लिए जूते और कपड़े ब्रोज़ीन से खुद ख़रीदने पड़ते। तब डैडी को बड़ी फ़सल उगानी पड़ती। फ़सल तैयार होने पर बॉस मैन कहता, "तुमने पैसे तो बनाए ही नहीं।"

सर्दियों में डैडी को दूसरी जगहों पर काम करना पड़ता - कपास की ओटनी के लिए लकड़ी काटने का, रेल की पटरियों के बीच वाले फट्टे बनाने का, इस तरह के काम। अगर अलग से कुछ पैसे बनाने हों तो आदमी को यही सब करना पड़ता था। पर बसन्त और गर्मियों में जब फ़सल उग रही होती, वे डैडी को भरपेट खाना देते ताकि वे देर तक कड़ी मशक्कत कर सकें।

जिस दिन मेरा बप्तिस्मा हुआ

मैं जिन काले लोगों के साथ बड़ी हुई उनमें से ज़्यादातर बॉगी बायू बैप्टिस्ट गिरजे में जाते थे। मुझे हर हफ्ते गिरजे जाना अच्छा लगता था। 'मैं जा रही हूँ बड़े बप्तिस्मा उत्सव में', 'अमेज़िंग ग्रेस' जैसे गीत गाना भी बड़ा ही अच्छा लगता था। और डेविड और मोसेस, पीटर और जोनाह और व्हेल की बाइबल कथाएं सुनना अच्छा लगता था। मामा मुझे ये कहानियाँ सुनाती थी। उसने मुझे ये याद भी करवाई थीं।

उन दिनों नन्हे शिशुओं का बप्तिस्मा नहीं करते थे। मैं आठ बरस की थी जब गिरजे के नज़दीक बायू खाड़ी के एक पोखर में मेरा बप्तिस्मा हुआ। हमारे पादरी साल में एक बार अगस्त के चौथे इतवार को बच्चों का बप्तिस्मा करते थे। जिस पादरी ने मेरा बप्तिस्मा किया वे माउंट मूर थे। उन्होंने एक लम्बा चोगा पहना और दो मददगारों के साथ पानी में उतरे, एक जो बच्चों को उनके पास लाए और दूसरा उनके पास खड़ा रह बारी-बारी बप्तिस्मा करने में मदद करे। इस दौरान बच्चों को पानी में साँप सिर उठाते, तब ओझल हो किसी दूसरी जगह वापस निकलते दिखते। दो-तीन बच्चे डर कर चीखते और पादरी कहते, "उन साँपों की फिक्र न करो, वे तुम्हें परेशान नहीं करेंगे क्योंकि तुम खुदा की हिफ़ाज़त में यहाँ हो। क्या तुम खुदा पर भरोसा नहीं कर सकते? खुदा तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा।"
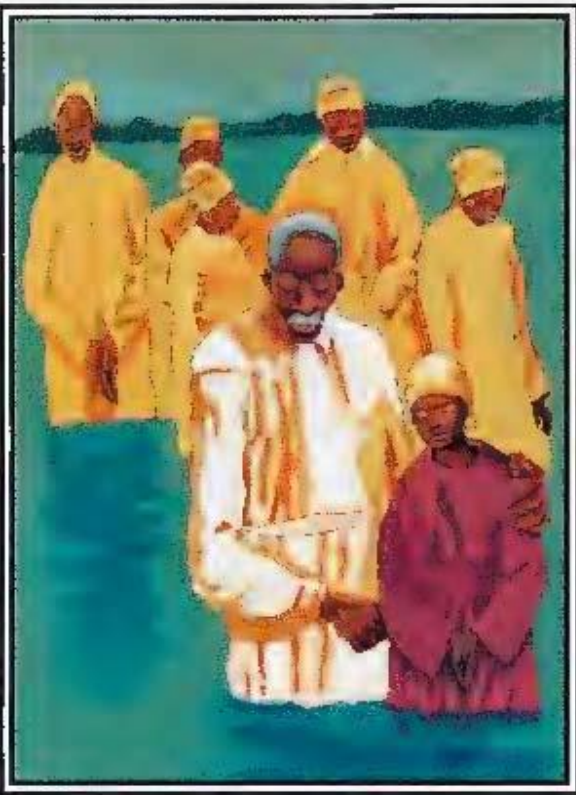
पादरी हरेक बच्चे को पानी में डुबकी देते और तब निकालते। वह कहते, "सब गाओ 'मैं खुश हूँ कि मुझे समय पर धरम मिला'।" तब हर बच्चे को किनारे लाया जाता, जहाँ वह अपनी माँ और दूसरे मददगारों से मिलते, जो उन्हें पास वाली छोटी इमारत में तैयार करने ले जाते।

मेरा बप्तिस्मा एक लाल पोशाक में हुआ। मामा ने कहा कि अगर मेरा बप्तिस्मा हो जाए तो किसी दिन मैं एक फ़रिश्ता बनूँगी, और मैं फ़रिश्ता बनना चाहती थी। गीला होना मुझे बुरा नहीं लगा क्योंकि मामा के पास मेरे पहनने के लिए एक और पोशाक थी।

सीखना गोरों के बारे में

जब मैं बड़ी हो रही थी तब हमारे आस-पास ज़्यादा गोरे नहीं थे। हम अधिकतर घर पर ही रहते थे।

जब मैं आठेक बरस की हुई तब कुछ-कुछ समझने लगी कि बड़े-बूढ़े क्या कह रहे हैं। वे आपस में धीमे-धीरे इस तरह बतियाते कि कोई सुन न सके, खास तौर से गोरों के पास होने पर। क्योंकि उन्हें डर रहता था कि उनके साथ न जाने क्या हो जाएगा। मैंने सुना था कि गोरे काले लोगों को ले जा कर जला देते हैं, या उनके पैर काट सकते हैं। इस तरह की कहानियाँ मुझे इतना डरातीं कि मैं सो ही नहीं पाती।

- - - -

जब मैं क़रीब नौ साल की हुई डॉ. ओल्डन एबनी, एक गोरे डॉक्टर ने मामा से पूछा कि क्या मैं उनके साथ रह सकती हूँ, ताकि घर और रसोई में उनकी बीवी की मदद कर सकूँ।

मामा ने कहा, "नहीं वह बहुत छोटी है। उसे तो यह भान तक नहीं कि वह क्या कर रही है।"

तब उन्होंने मामा से चिरौरी की, तो मामा ने कहा, “मैं खुद ही बीमार हूँ, और जितना सा वह कर पाए उतनी सी मदद के लिए मुझे मेरी बेटी की ज़रूरत है।”

मैं काम करने के लिए तो उनके घर नहीं रहना चाहती थी, पर जो अच्छा खाना वे मुझे देते उसके लिए ज़रूर रहना चाहती थी। सो मैंने मामा से कहा, “मैं रहना चाहती हूँ।”

और मामा ने कहा, “नहीं, तुम नहीं रह सकती।”

मामा ने यह कहने के लिए मेरे पैर लात जमाई कि मैं उनके घर रहना चाहती हूँ।

मामा ने कहा, “यह कुछ समय रह सकती है, पर मैं उसे लेने वापस आऊँगी, डॉक्टर।”

तब मामा ने मेरे पैर को फिर से लतियाया और मैंने कहा, “मैं रहना नहीं चाहती, मैं मामा के साथ घर जाना चाहती हूँ।”

अगर मामा ने मुझे इशारा नहीं किया होता तो मैं उनके यहाँ रुकती और उनकी चाकरी करती होती।

- - - -

जब कभी मामा कस्बे जाती, वह कहती, “हर बार जब मैं कस्बे जाती हूँ वह आदमी मेरे कुत्ते को लातें जमाता है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वह शिकारी कुता है। उसे मेरे कुत्ते को लतियाना बन्द करना चाहिए।”

हम भी यही कहते, बस घर के पिछवाड़े में, पर मामा मुझे चुप रहने की नसीहत देती क्योंकि उसे लगता था कि मैं गोरों के आस-पास यह न कह दूँ, सबको मुसीबत में न फंसा दूँ।
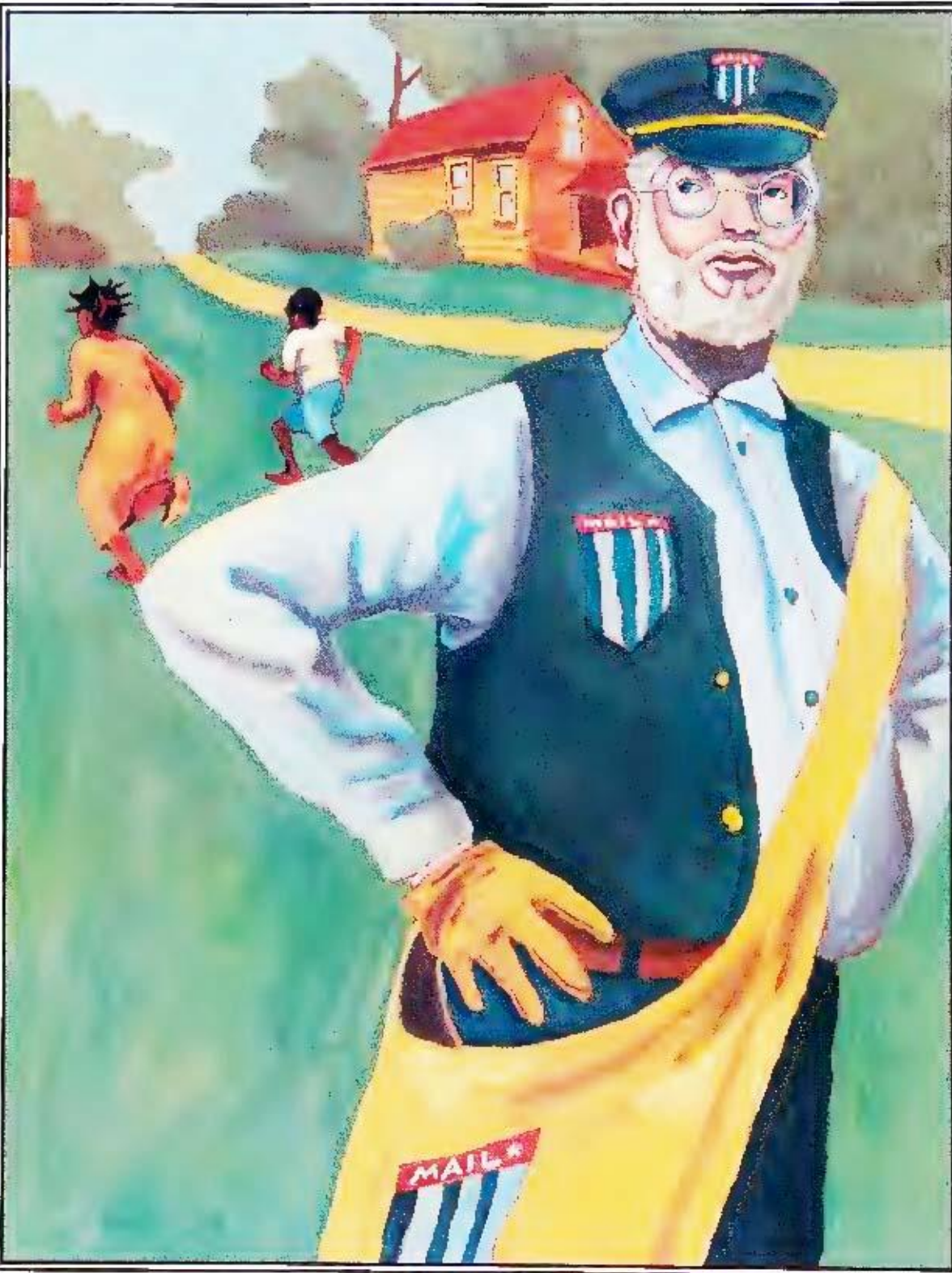
डर

जब मैं लड़की थी, मामा खेत में काम करने जाती थी। मैं गोरों से इतना डरती थी कि मैं और मेरा छोटा भाई डाकिए को आते सुन बिस्तर के नीचे दुबक जाते थे। वह एक गोरा था। हम उसे अपनी दो-पहिया बग्घी पर या घोड़े पर सवार आते सुनते, इसे पोनी (टट्टू) एक्सप्रेस कहा जाता था। हम घर दौड़ते और बिस्तर के नीचे घुस जाते और वहीं दुबके रहते, वहाँ से हिलने तक से डरते।

और जब मामा और डैडी घर लौटते, हम किवाड़ तक नहीं खोलना चाहते। हमें लगता कहीं डाकिया हमें धर-पकड़ने न लौटा हो।

एक बार डाकिया अपनी बग्घी में बैठा हमारे पास से गुज़रा और हम डाक डब्बे से डाक निकालने दौड़ पड़े। उसने कहा, "घर लौटो। आगे कभी उस वक़्त न आना जब मैं डब्बे में डाक डाल रहा होऊँ।"

हम फौरन वापस घर की ओर दौड़े और वहीं रहे। उस दिन के बाद से हमने डब्बे से डाक निकाली ही नहीं, जब तक मामा आकर उसे न लाती। हम बेहद डर गए थे। लोग हमें गोरे लोगों की कारस्तानियों के कितने ही किस्से सुनाते थे।

वासकॉम के आस-पास जो कोई गोरों के कायदे-कानूनों को तोड़ता तो एक गिरोह आकर उसे ले जाता। बचने के लिए उन्हें दूसरे राज्य में भागना पड़ता। मैं तब क्लू क्लक्स क्लैन के बारे में जानती नहीं थी, पर लगता है कि 'गिरोह' उन्हीं का होता होगा। वे घोड़ों पर सवार हो आते। जिस नीग्रो ने ऐसा कुछ किया हो जो उन्हें नापसन्द आया हो, वे उसे धमकाते, कहते "गिरोह" आ रहा है। वह काला जंगल में जा छिपता या किसी दूसरे के घर पनाह लेता। उस रात अपने घर नहीं रहता।

मुहल्ले में कोई मरता या मारा जाता यह बड़े ही दुख की ख़बर होती। ज़्यादातर बड़े-बुज़ुर्ग यह नहीं चाहते थे कि बच्चे सब कुछ जानें और उन दिनों बच्चे बहुत जानते भी नहीं थे। हमें तमाम चीज़ें अपने ही तरीके से जाननी-सीखनी पड़ती थीं। घर के अन्दर जाकर तब पानी पिओ जब बड़े धीमी आवाज़ में बतिया रहे हों और गुपचुप सुनने की कोशिश करो। पर हम रुकते नहीं थे क्योंकि ऐसा करते ही वे बोलना बन्द कर देते थे।

किस्से गुलामी के

मेरी दादी और लूसी लुईस पहले लोग थे जिन्होंने मुझे गुलामी के दिनों के बारे में बताया था। लूसी लुईस हमारे मुहल्ले की ही औरत थी जिसे सब चची लुईस कहते थे।

मेरी दादी का नाम लॉरा वॉकर था। वे अपने गुलाम मालिक का नाम ओढ़े-पहने थी। दादी ने कहा कि जब गुलामी खत्म हुई वह महज दस बरस की थी। दादी को बचपन में ही बेच दिया गया था, सो वह दक्षिणी कैरोलाइना में रहती थी। गुलामी खत्म होने के बाद दादी अपने माँ-बाप के पास टैक्सास लौटी।

दादी बताती थी कि वह सचमें अच्छी लड़की थी और उसने तब कभी कोड़े नहीं खाए थे, जब वह अपनी मालकिन और मालिक के पास थी। पर कई गुलाम लड़कियों को बेरहमी से सूँता जाता था, जब तक उनकी पीठ लहू-लुहान हो कोड़े के निशानों से भर न जाती।

सभी गुलाम बच्चे जानवरों की तरह पुरानी लकड़ी से बनी नाँद से खाना खाते थे। वे खेत-मज़दूरों के लिए हरे पत्ते और मटर उबालते और बच्चों के लिए उसका पानी उडेल देते।

चची लूईस बतातीं कि जब वह गुलाम बच्ची थी उसे बिल्लियों की तश्तरी से खाना पड़ता था। वह पहले बिल्लियों को खाने देती थी, और जब वे खा चुकतीं तब ही खाती थी। अगर वह ऐसा नहीं करती तो उन्हें चाबुक पड़ती। कभी उनकी मालकिन वह खाना चची के चेहरे पर मल देती और उसे दिन भर चेहरे को वैसे ही रहने देना पड़ता, क्योंकि वह मुँह धोने तक से डरती थी।

- - - -

गुलाम दूसरे गुलामों को बच कर निकल भागने का इशारा करने के खास गीत गाते थे। गुलामों के मालिकों को उनके गाने पर एतराज़ नहीं था। मामा ने मुझे बताया कि इन गीतों के लफ़्ज़ों में जो इशारे छिपे थे उनका इल्म मालिकों को नहीं था: "मैंने जो मुश्किलें झेली उन्हें किसीने न देखा", "भाग पापी भाग", "मैं खुश हूँ कि मुश्किलातें हमेशा कायम नहीं रहतीं", और "नीचे झूल प्यारे रथ"।

अगर गुलाम चतुर होता तो वह इशारा पकड़ लेता। उनमें से कुछ पलट कर यह भी गा सकते थे, "गर तू वहाँ पहुँचे (मतलब आज़ादी से था) मुझ से पहले, कहना मेरे यारों से मैं भी आ रहा हूँ," और "किसी दिन उतारूँगा यह भारी बोझ"। अगर गुलाम मालिकों को पता होता कि वे किस बारे में यह सब कह रहे हैं, तो वे उन्हें ज़रूर ढेरों कोड़े लगाते।

गृह युद्ध

जब मैं तक़रीबन नौ बरस की थी, मेरी दादी ने मुझे 'गृह युद्ध' कविता सिखाई। उन्होंने यह कविता खुद जोड़ी थी क्योंकि वे चाहती थीं कि मैं गृह युद्ध के बारे में और काले लोग अपने देश के लिए कैसे लड़े, यह जान लूँ। मेरी दादी बड़ी सख़्त थी, जब वह बोलती तो मुझे बड़े ध्यान से सुनना पड़ता:

गृह युद्ध की शुरुआत में

गोरे आदमी ने किया था इसे शुरू

पर जंग खत्म होने के पहले

काला आदमी उसमें था उलझा।

सान हुआन पहाड़ी की मुठभेड़ में

घुड़सवारों ने की थी शुरुआत

पर जंग खत्म हो उसके पहले

काला आदमी उसमें था उलझा।

पार्कर ने गिराया हत्यारे को

और शुरू किया उसे मारना

पर झगड़ा खत्म हो उसके पहले

काला आदमी उसमें था उलझा।

गोरों, काली कौम की हत्या, उसे जलाना करो बन्द

करने को उसकी कौम को कम

तुम जाओ चाहे स्वर्ग या जाओ नर्क

नीग्रो वहाँ तुम्हें मिलेगा ज़रूर।

कभी वे हमें देते हैं पैसे अदालत में हलफ़ उठाने या बोलने को झूठ

काले और गोरे दोनों ही कर गुज़रते हैं यह

पर सच्चाई चमकेगी समय के अन्त तक

मिलेगा तुम्हें एक नीग्रो उसमें।

आज़ादी

जब नीग्रो लोगों को आज़ाद किया गया उन्होंने कई छोटे गीत और कविताएं बनाईं। हम बड़े-बूढ़ों को उन्हें गाते-बोलते सुनते थे। मैं इन्हें हमेशा सीखती रहती थी।

गुलामी खत्म होने के बाद काले आदमी को पता था कि उसे गोरे के खेत में खटने नहीं जाना है, सो वह कहता:

एक, दो, तीन, देखो मेरी ओर

गोरे हैं नाराज़

क्योंकि काले हैं आज़ाद

चबाता मैं तम्बाकू और थूकता हूँ पीक

जा सकता मैं खेत, पर मतलब नहीं उसका।

यह मैंने बहुत लोगों से नहीं सुनी पर डैडी की बहन फैनी मूर से ज़रूर सुनी। वे मुस्कुरा रही थीं। यह परंपरा थी। वे जब यह कविता कहतीं, उनको गुदगुदी लगती। वे ज़ोर से हंसतीं और कहतीं, "हम इतने आज़ाद भी नहीं हैं। हमें अभी लम्बी दूरी तय करनी है।

एक औरत, एक काली औरत ने कहा:

आख़िर हूँ आज़ाद,

आख़िर हूँ आज़ाद

शुक्र है परवरदीगार का

मैं आख़िर हूँ आज़ाद

आह, मेरे लिए आज़ादी।

पहले कभी थी गुलाम

होती अपनी कब्र में दफ्न

जाती खुदा के पास ताकि बचा ली जाऊँ।

जब थी मैं गुलाम

गिर घुटनों पर अपने करती थी दुआ

किसी दिन होऊँ मैं आज़ाद।

सुना परवरदीगार ने मेरा भीषण क्रंदन

जाऊँगी घर खुदा के पास और बचा ली जाऊँगी।

जहाँ तक याद है 'आख़िर हूँ आज़ाद' मैंने डैडी की बहन जॉर्ज एना रिचमण्ड से सुनी थी। मुझे पता नहीं उन्हें यह कहाँ से मिली। हो सकता है उसे अपनी माँ लॉरा यानी दादी से मिली हो। यह कविता मैं अक्सर सुनती थी। लोग इसका गीत बना लेते थे।

जूनटीन्थ

जूनटीन्थ वह दिन था जब टैक्सास के गुलामों को बताया गया कि वे आज़ाद हैं। 19 जून 1865 के दिन।

हम हर साल जूनटीन्थ का उत्सव मनाते थे। गोरे लोग कालों को खेतों से छुट्टी देते - उस दिन न कपास ना ही मक्की ओड़ी जाती, न कपास उतारी जाती, न खेत जोता जाता। सारे टट्टू चरागाह में ही रहते। सभी काले परिवार जश्न मनाते। खाने के लिए अलाव पर भुने गाय और सूअर के माँस जैसी लज़ीज़ चीज़ें होती थीं, जो हम हर दिन नहीं खा सकते थे। मेरी दादी चाय केक बनाती थी, अदरक की डबलरोटी और गुड़ की डबलरोटी भी। मेरे डैडी ढ़ेर सारा लाल सोडा पॉप ख़रीदते और घर पर आइसक्रीम भी बनाते। हम पिकनिक करते और खेत में उगा तरबूज खाते। एक बड़ा पीपा शिकंजी से भरा होता था।
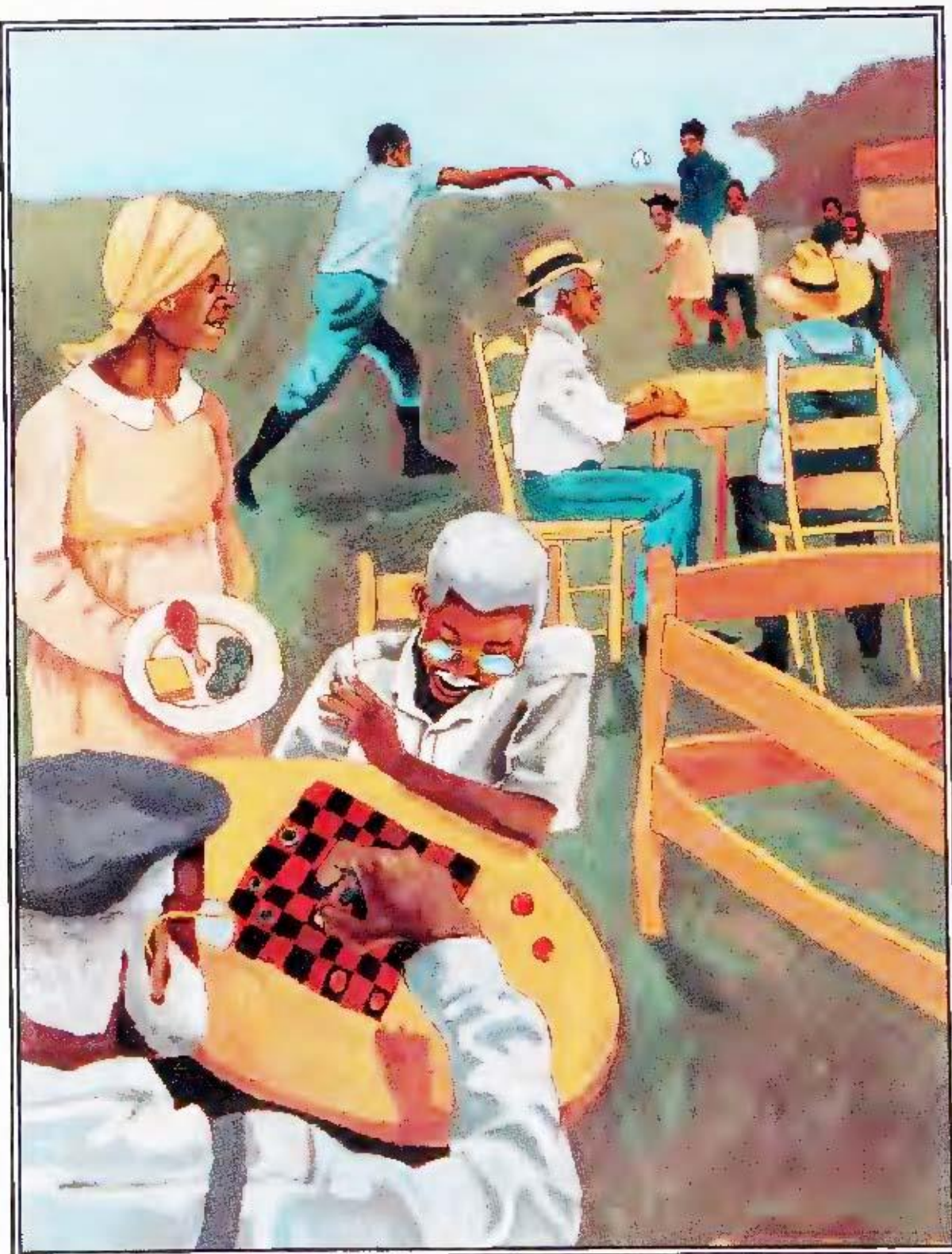
वासकॉम कस्बे के पास ही पूरा का पूरा मुहल्ला पिकनिक स्थल पर इकट्ठा होता। वहाँ एक इमारत भी थी जिसका इस्तमाल किया जा सकता था, उसे प्लान्टेशन हॉल कहा जाता था। हम बेसबॉल खेलते और दौड़ लगाते। सबसे तेज़ दौड़ने वाले को डाइम (दस सेंट) या शायद क्वार्टर (पच्चीस सेंट) का इनाम मिलता।

और जो बेसबॉल को सबसे दूर फेंकता, वह दो सेब जीतता। उन दिनों एक डाइम से वह सब ख़रीदा जा सकता था जो आज एक डॉलर से ख़रीदा जा सकता है। कुछ आदमी उन घोड़ों की पहली बार सवारी करते जिन पर कभी सवारी न की गई हो। वे उन्हें जूनटीन्थ को 'तोड़ते' (पालतू बनाना)। सब लोग मौज-मज़ा करते, हंसते-बतियाते, उस दिन का जश्न मनाते जिस दिन उनसे कहा गया था कि वे अब आज़ाद हैं।
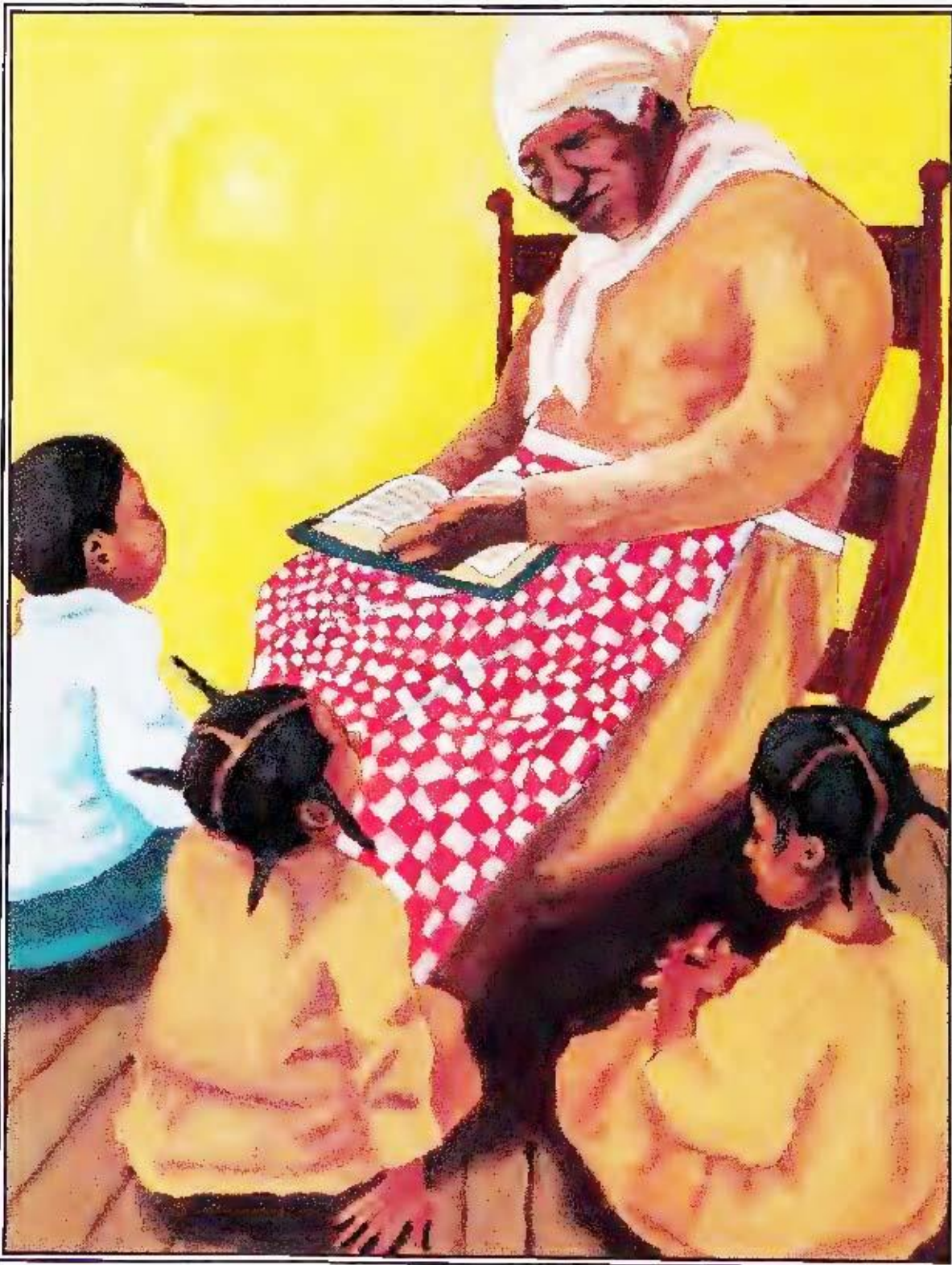
याद रखने के लिए उसे ताल में बांध लो

मैंने सीखना तब तक नहीं शुरू किया जब तक मामा ने मुझे यह न कह दिया कि अगर मैं नहीं सीखती तो वे मुझे सिखाएंगी। "कभी भूलना नहीं कि जो मैं बता रही हूँ उसकी ज़रूरत तुम्हें किसी दिन पड़ सकती है। किसी दिन यह तुम्हारे लिए एक बड़ी भारी नियामत हो सकती है।" और तब उसने मुझे वह सब बताना शुरू किया जो मुझे जानना चाहिए।

दोपहरी के खाने के बाद मेरी मामा हमें सामने वाले बरामदे बैठाती और बाईबल से पढ़ती।

वह मुझसे कहती, "यह ठीक से सुनो, मैं हमेशा यहाँ नहीं होने वाली," और मैं फ़र्श पर बैठ सिर्फ़ सुनती। तब मामा गाती और कहानियाँ सुनाती। जब मैं बहुत छोटी थी वह मुझे तुकबंदियाँ सुनाती-सिखाती, बाद में कुछ बड़े होने पर कविताएं।

मेरी मामा और दादी पूरे समय गाती रहती थीं। उन दिनों जब लोग गाते उन्हें मील भर की दूरी से सुना जा सकता था। वे दमदार आवाज़ में गाते थे। आख़िर संगीत के लिए उन्हें सिर्फ़ अपने मुँह की ज़रूरत ही तो पड़ती थी।

मुझे याद है कि चीज़ें कैसी सुनाई देती थीं। मुझे जो कुछ भी याद करना हो मैं उसे उस जैसी ध्वनि में आज भी सुना सकती हूँ। कभी मैं याद रखने के लिए उसे ताल में बांध लेती थी।

जंग है छिड़ी

मैं नन्ही-सी थी जब पहला विश्व युद्ध छिड़ा, पर मामा ने उसके बारे में मुझे एक कविता से बताया।

जंग है छिड़ी

जंग है छिड़ी।

हो जाओ सब तैयार

कि जंग है छिड़ी।

उन्नीस और सतरह में अप्रेल के आठवें दिन

संयुक्त राज्य में हुआ एलान-ए- जंग।

सभी राज्यों ने कहा रखते हम इत्तफ़ाक

देश हमारा कर सकता समन्दर पर राज।

जंग है छिड़ी

हो जाओ सब तैयार

कि जंग है छिड़ी।

संयुक्त राज और उसके तमाम दोस्त

मिले एक बैठक में आमने-सामने।

बोले हमें चाहिए सिर्फ़ एक मौका

जाने को जर्मनी, देखने उसमें कितना है दम।

जंग है छिड़ी

जंग है छिड़ी।

संयुक्त राज्य और उसके दोस्त

बोले आ जाओ दुनिया-जहाँ

खुदा है हमारे साथ।

दिखला देंगे जर्मनी को, हम अपना दमखम

डुबो देंगे उनकी पनडुब्बियाँ।

जंग है छिड़ी

हो जाओ सब तैयार

कि जंग है छिड़ी।

बता दो बिली काइज़र को क्या वुडरो विल्सन ने कहा

लड़ना न करेंगे बन्द

जब तक मार न डालें उसको।

जाओ बजा दो आज़ादी का घंटा

और दो बूढ़े काइज़र को नरक में एक कमरा।

कि कुछ ही हफ्ते लड़ने के बाद

गिर गया बिली काइज़र का झंडा।

जंग है छिड़ी

जंग है छिड़ी।

गिलियम का तूफ़ान

मैं लगभग छह की हुआ चाहती थी जब मैंने 'गिलियम का तूफ़ान' सीखी। कविता मुझे मामा ने सुनाई थी और डैडी उसे गीत बना गाना पसन्द करते थे। मुझे तूफ़ान आने की याद तो नहीं, पर कविता जानती हूँ। मामा और डैडी गिलियम, लूइसियाना में रहा करते थे। वे कहते थे कि गिलियम अधम जगह थी क्योंकि उस कस्बे में एक ही गिरजा था और लोग कालों से अच्छा सुलूक नहीं करते थे।

क्या वह भारी ज़बर समय न था

क्या वह भारी ज़बर समय न था

जब आया था तूफ़ान गिलियम में

कैसा पापी-अधम था गिलियम कस्बा

बस एक ही था वहाँ गिरजाघर

लगता था यों कि लोग खुदा की सेना को चुके थे पछाड़।
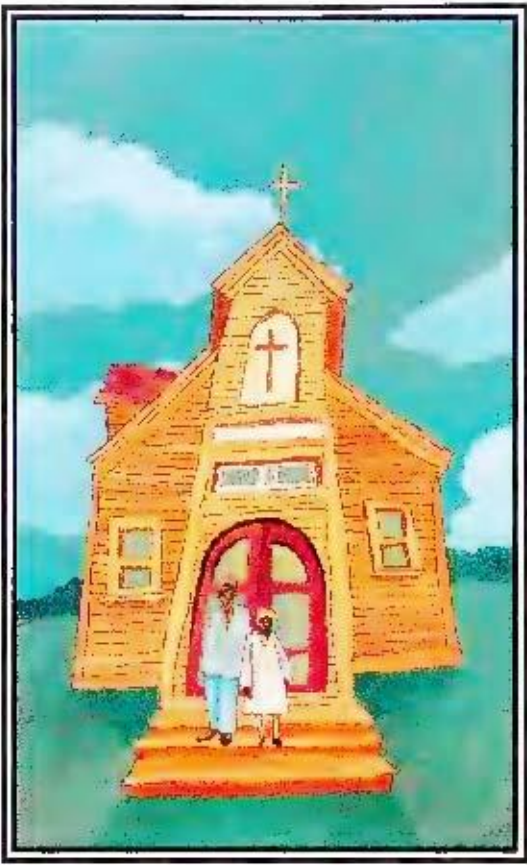
उस देर शाम बुधवार को उठे घने नीले बादल

ओह, क्या वह भारी ज़बर समय न था

जब आया था तूफ़ान गिलियम में?

चल पड़े बादल

श्रेवे पोर्ट लूइसियाना की ओर

पर खुदा ने पलटा बादलों का रुख़

जानता था वह कि पोर्ट श्रेवे में

बसते हैं कुछ ईसाई और कुछ पापी।

क्या वह भारी ज़बर समय न था

ओह, क्या वह भारी ज़बर समय न था

जब आया था तूफ़ान गिलियम में?

औरत एक बोली अपने ख़ाविन्द से

लगता है बादल अब चुके हैं जा

परवरदीगार करता है काम अपने रहस्यमय तरीके से

करता है अजूबे

छोड़ता है निशान पैरों के समन्दर पर

और तूफ़ान को देता है जाने गुज़र।

ओह क्या वह भारी ज़बर समय न था

जब आया तूफ़ान गिलियम कस्बे में।

सांता क्लॉज़ की रात

सांता क्लॉज़ की रात मैं खुश होती थी। मैं जानती थी कि मुझे एक तोहफ़ा मिलेगा। मैं अलाव के पास एक मोज़ा टांगती और जानती थी कि सांता क्लॉज़ सेब और संतरे और कुछ मीठा उसमें रखेगा - या एक छोटी गुड़िया जिसका सिर चीनी मिट्टी का हो और हाथ-पैर कपड़े से बने हों।

जब मैं चार या पाँच साल की थी मेरी मामा ने मेरे लिए घुंघराले बालों वाली एक शिशु गुड़िया ख़रीदी जो गोरी थी। उस ज़माने में काली गुड़ियाएं नहीं हुआ करती थीं। फिर भी मैं इस बेबी गुड़िया को पा बेहद खुश थी। उसके हल्के भूरे बाल थे जिसके घूंघर बड़े-बड़े और घने थे। वह एक सादी चैखाने वाली फ्रॉक और टोपी पहने थी। उसके सफ़ेद मोज़े और काले जूते थे, जिन पर एक ऐसी पट्टी थी जिसकी एक तरफ़ बटन लगा हुआ था।

सांता क्लॉज़ रात पर मुझे सिर्फ़ दो ही गुड़ियाएं मिलीं। एक चीनी मिट्टी के चेहरे वाली और दूसरी यह घुँघराले बालों वाली। इसके अलावा मेरी जितनी भी गुड़ियाएं थीं वे सब घर में बनाई हुई थीं। उन दिनों लोगों को आटा बोरियों में मिला करता था और उस बोरी पर कोई गुड़िया आँकी जा सकती थी। और मामा बोरी पर आँकी गुड़िया को काट उसे सिल देती थी। वह दो टुकड़ों को जोड़ कर सीती और अन्दर रूई भर देती।

जब मैं छोटी थी मुझे अपने खिलौनों से बड़ा ही प्यार था, अब भी है। मुझे बचपन के तमाम सालों में सिर्फ़ तीन खिलौनों की याद है - मेरी दो गुड़ियाएं और टीन से बना एक चूल्हा। उस पर लाल और सफ़ेद चैखाने रंगे हुए थे। साथ में टिन से बनी छोटी बटलोइयाँ और भगोने भी थे।

मामा और डैडी और सभी बड़े-बुजुर्ग सांता क्लॉज़ की रात को अच्छा बनने की नसीहत देते थे। क्रिसमस के दिन हम पाउण्ड केक खाते, शिकंजी और मीठा दूध पीते। तब वे यीशू की बात करते क्योंकि क्रिसमस का दिन यीशू का जन्मदिन जो था। वे बताते कि यीशू मेरी का बच्चा है। मुझे याद है कि मैंने पूछा था कि यीशू क्या अब भी शिशु है, और उन्होंने कहा था कि वह बड़ा हो गया है, डैडी जैसा पूरा आदमी बन चुका है। वे बाईबल से यीशू की कहानियाँ सुनाते और स्पिरिच्युल (काले लोगों के आध्यात्मिक गीत) और गिरजे के गीत गाते।

मामा की मौत

मामा ने कहा था कि वे जाने वाली हैं। पर मैंने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। मैं समझ पाने के लिए बहुत छोटी थी। मैं सिर्फ़ दस बरस की थी जब मामा एक प्रसव के दौरान चली गई। वह बच्चा तीन दिन का था और मामा मर गई, वह दो लड़के और एक लड़की को छोड़ गई थी। कुछ सप्ताह बाद मुझे मामा की याद सताने लगी और मुझे तब जाकर अहसास हुआ कि वह कभी वापस नहीं लौटेगी।

मामा के बाद मुझे बुरे वक़्त का सामना करना पड़ा। मेरे डैडी काम की तलाश में पश्चिमी टैक्सास गए और मुझे अपनी सबसे बड़ी बहन के पास छोड़ गए। बुआ के तीन बच्चे थे, उनकी सबसे छोटी बेटी ग्यारह बरस की थी और वह मुझसे अच्छा बरताव नहीं करती थी। बहुत ही ख़राब सुलूक था उसका मेरे साथ। जब दूसरी लड़कियाँ खेलने आतीं, वह कहती, ''इसके साथ मत खेलो।''

मेरी बुआ ने मुझे कुछ नए कपड़े दिए, मेरी उस फुफेरी बहन ने कपड़े घर से दूर खरपतवार में फेंक दिए। वे मुझे ढूंढे न मिले, बुआ मुझे कपड़े न मिलने पर चाबुक से सूँतने वाली थी। फुफेरी बहन बोली अगर मैं उसे मीठी गोलियाँ दूँ तो वह कपड़े ढूंढ़ने में मेरी मदद करेगी। और मैंने उसे मीठी गोलियाँ दीं और खिड़की से झाँक कर देखा, वह पिछवाड़े गई और कपड़े ले आई। मैंने अपनी आँखों से देखा कि वह कहाँ से लाई है।

मैं उनके साथ साल भर तक वासकॉम के देहाती डाक पथ पर रही, जब तक मेरे डैडी लौट न आए। डैडी ने फिर से शादी की और हम जुएला, लुइसियाना रहने चले गए। मुझे मेरी सौतेली माँ के साथ रहना बुआ के घर रहने से ज़्यादा अच्छा लगा, क्योंकि बुआ के घर खाना भी ठीक से नहीं मिलता था।

मामा के गुज़र जाने के बाद सांता क्लॉज़ मेरे पास नहीं आया। मामा के मरने तक मुझे हर साल एक तोहफ़ा मिलता था, पर उसके बाद मुझे कुछ न मिला। मामा के मरने के बाद मेरे डैडी मुझे कोई तोहफ़ा नहीं देते थे। वे सिर्फ़ फल और मीठी गोलियाँ देते थे।

मेरी सौतेली माँ

मेरी सौतेली माँ का नाम गरट्रूड मूर था और उसके मेरे डैडी के साथ बच्चे हुए। दो लड़के और चार लड़कियाँ।

मेरी सौतेली माँ अच्छी थी। वह मुझे हर महीने अपने छोटे बच्चों के साथ ट्रेन में बैठा ले जाती थी। हम वासकॉम जाते, सौतेली मासियों और सौतेले मामाओं से मिलने।

मैं रात अपने सौतेले मामा के घर बिताती, उनकी पत्नी चाय केक बनाती और दूसरे अच्छे खाने भी। मुझे बड़ा अच्छा लगता। जब हम लूइसियाना से वासकॉम लौट आए, मैं हर सप्ताहान्त अपने सौतेले परिवार के साथ मज़ा करती जो मुझे मेरे रिश्तेदारों के साथ समय बिताने से कहीं ज़्यादा अच्छा लगता।

मेरी सौतेली माँ हर क्रिसमस को मेरे लिए एक नई फ्रॉक बनाती। मेरी पसन्दीदा फ्रॉक में लाल और सफ़ेद धारियाँ थीं, जो उसने तब दी जब मैं तक़रीबन बारह साल की थी।

वह हर साल मेरे लिए एक फ्रॉक बनाती, पर मुझे तब तक कोई नए खिलौने नहीं मिले, जब तक मैं इतनी बड़ी न हो गई कि अपने लिए उन्हें खुद ख़रीद सकूँ। शायद मैं तब क़रीब सतरह साल की रही हूँगी। इसीलिए मुझे खिलौने अब इतने अच्छे लगते हैं।

मुझे छोटी गुड़ियाएं और छोटी गाड़ियाँ पसन्द हैं क्योंकि मैं बचपन में उन्हें चाहती थी - बग्घियाँ, कारें, ट्रक, हर चीज़ जिसमें छोटे पहिए हों।

स्कूल

जब मैं स्कूल जाती थी और अच्छे नम्बर लाती, मैं बहुत खुश होती। मुझे एक ही कक्षा में दो बार बैठना जो नहीं था।

हर दिन जब मैं स्कूल जाती मैं उन कहानियों और कविताओं को याद करती जो मामा ने मुझे सिखाईं थीं। मैं उन्हें बार-बार खुद को ही सुनाती, इस तरह मामा हमेशा मेरे साथ होती। मामा को कविताओं से प्यार था और उनके गुज़र जाने के बाद मैं उन्हें ज़िन्दा रखना चाहती थी।

जब मैं ग्यारह या बारह या तेरह बरस की थी मुझे स्कूल में कविताएं सुनाने पर बड़ा ही गुरूर होता। हर शुक्रवार को मैं कक्षा में खड़ी होती और कविताएं बोलती। सभी बच्चों को वे इतनी अच्छी लगतीं कि मैं खुद भी उन्हें लिखने लगी।

आठवीं कक्षा में मैंने 'भविष्य का मैदान' लिखी। वह कविता जो कुछ तुम्हारे पास उपलब्ध हो उसीसे सबसे अच्छा करने के बारे में थी।

भविष्य का मैदान

वे कहते हैं मुझसे, तुम जाने वाली हो मेरी दोस्त
दूर घर-बार से
बाहर भविष्य के मैदान में
खेलने जीवन गेंद का खेल।
कहते वे यह भी हैं, तुम हो एक और बीस की,
पर लगती नहीं हो उतनी बड़ी।
लगती हो छोटी और छरहरी इतनी
कि संभाल सको ज़िन्दगी की गेंद और बल्ला।
हालांकि हूँ मैं कुछ धुंघलके में
या पुराने ज़माने की सी, फ़र्क नहीं पड़ता इससे ख़ास
कि मैं कहती क्या हूँ, फिर भी देना चाहूँगी तुम्हें
कुछ सलाह इस खेल के बारे में
जो तुम खेलने वाली हो।
अब जब खेलोगी तुम खेल, खेलना बख़ूबी।
जब खेलोगी खेल
खेलना पूरी ताकत से
कि आधा खेला खेल होता नहीं कभी सही।
जब मारो गेंद को, मारना उसके सर पर
मारना अपनी समूची ताकत से, जब लोहा हो लाल।
जब करने को हो काम
करना अपनी पूरी ताकत से,
कि आधी की गई चीज़ें
कभी सही नहीं होतीं।
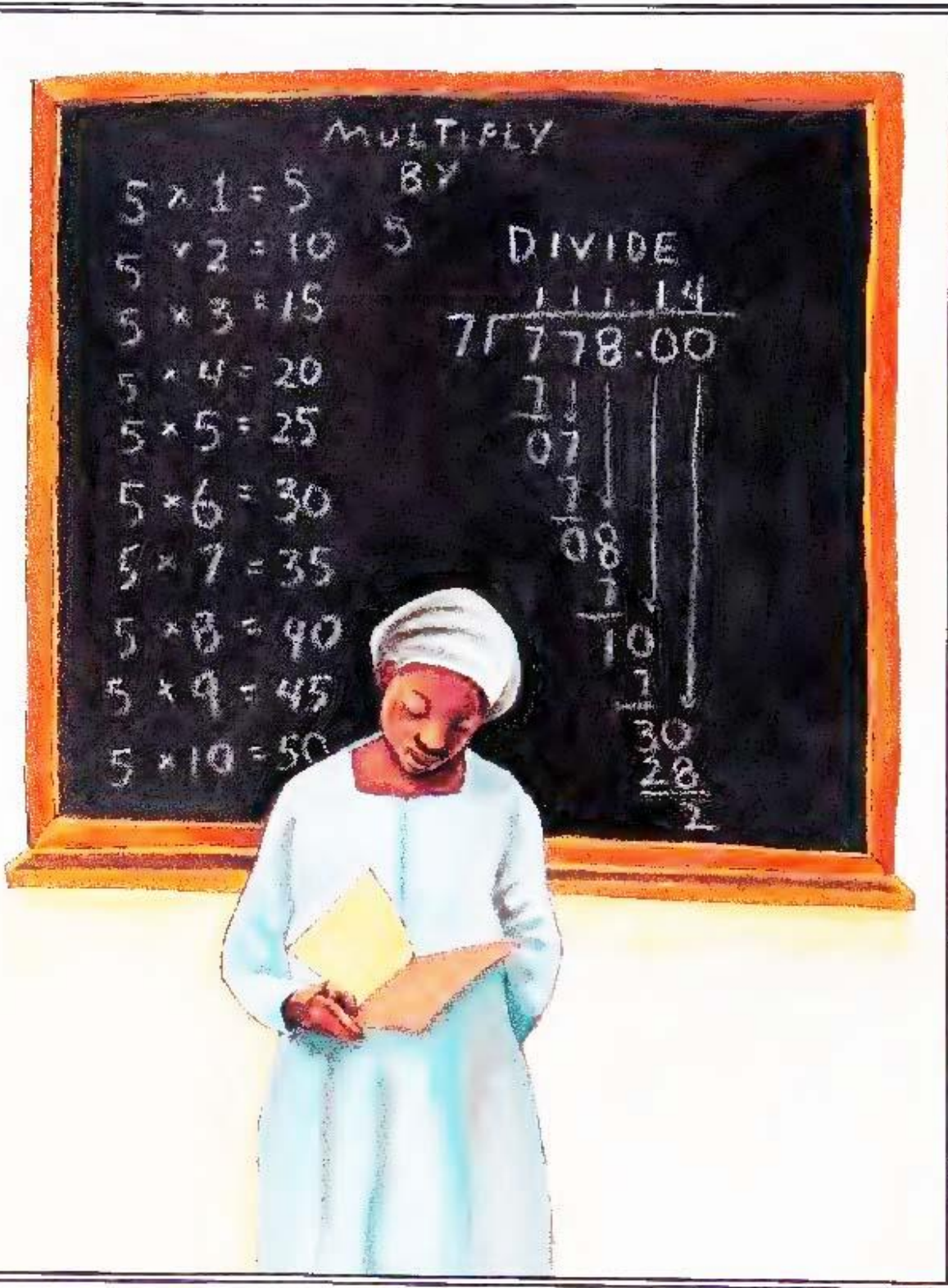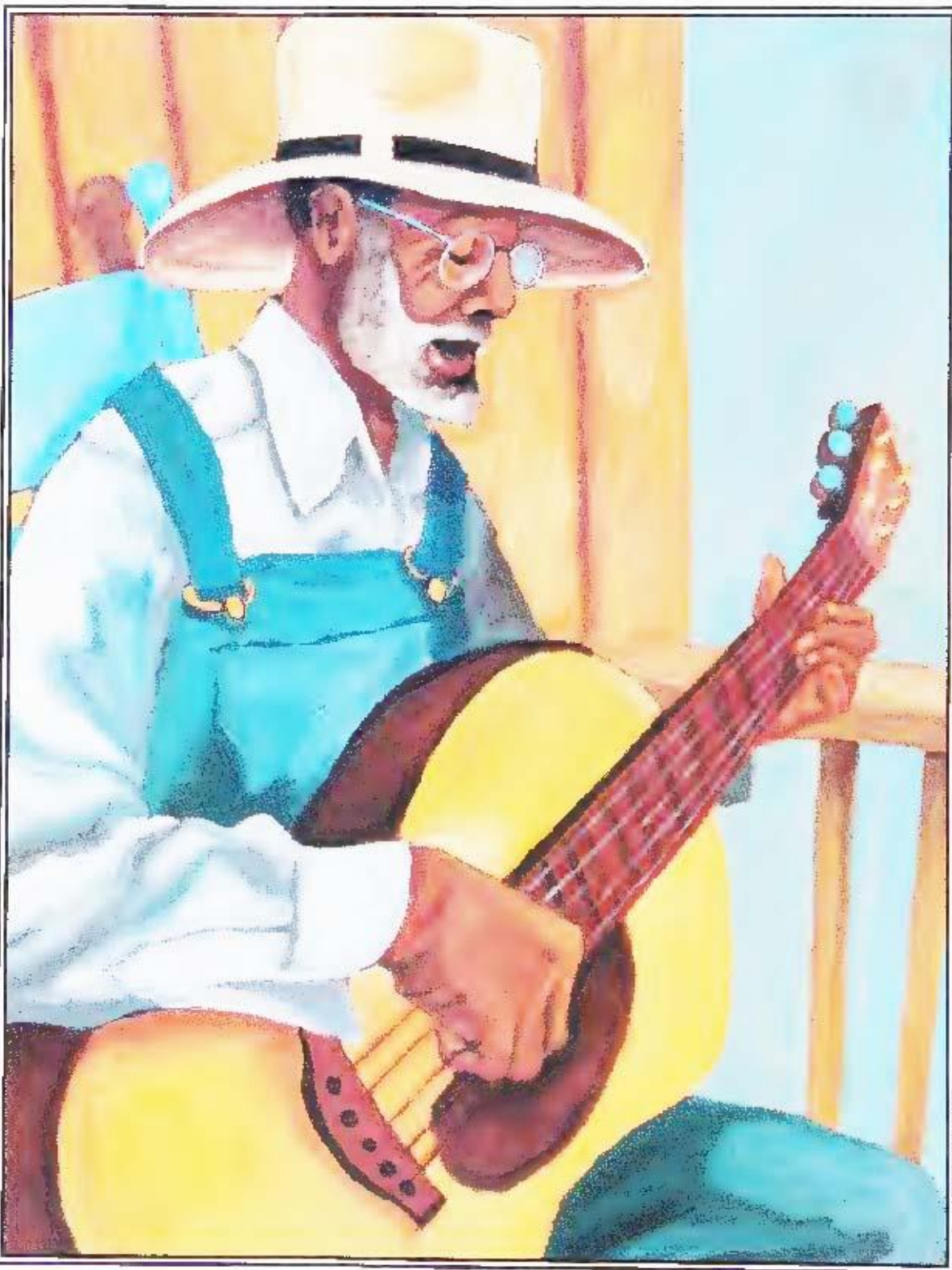
ब्लूस्

जब मैं खेतों की छोटी लड़की थी मुझे खेत में वे लोग सुनाई देते थे जो जंगल से ब्लूस् (मंद उदास गीत) गाते गुज़रते थे। "पानी की कमी तुम्हें खलेगी नहीं तब तक, जब तक न सूख जाए कुंआ तुम्हारा। अपने शिशु की कमी तुम्हें खलेगी नहीं तब तक, जब तक वह अलविदा न कह दे।"

बड़े-बूढ़े कहते थे कि ब्लूस् 'शैतान का संगीत' था। मेरी दादी ने मुझे कहा, "उन ब्लूस् से दूर रहना," और मैं रही भी। पर कुछ ब्लूस् गीतों में गहरे मायने होते हैं।

चमकेगा सूरज मेरे पीछे वाले दरवाज़े पर एक दिन
तब, जब उसके आख़िरी जोड़ी जूते का ताला न होगा।

ब्लूस् कुछ नहीं सिवा एक नेक इन्सान की उदासी के
ब्लूस् वह सबसे बुरी चीज़ है जो किसी नेक इन्सान के पास हो।

मुझे ब्लूस् की ध्वनियाँ अच्छी लगती थीं और जिस तरह गायक शब्दों को जोड़ते-सजाते थे वह भी। उनमें से कुछ जीवन के खरे-सच्चे शब्द थे।

मुझे रिकार्ड प्लेयर पर ब्लूस् सुनना याद है। हमारे पास रिकॉर्ड प्लेयर नहीं था, पर हमारे पडौसियों में से एक के पास था। तभी मैंने अंधे लैमन जैफरसन को सुना। उसने गाया था: 'मैं हूँ कड़का...नहीं है दमड़ी तक मेरे पास...आते हैं बुरे दिन कभी-कभी सबके।'

कई ब्लूस् कविता की तरह होते हैं। जब मैं उन्हें रिकॉर्ड प्लेयर पर सुनती वे मुझे प्रेरणा देते, पर बड़े-बुजुर्ग नहीं चाहते थे कि हम उन्हें सुनें।

काले आदमी की इन्साफ़ की गुहार

जब मैं बड़ी हुई मुझे ई. डी. टायलर की कविताएं अच्छी लगने लगीं। वे लूइसियाना के पादरी थे और कविताएं रचते थे। 'काले आदमी की इन्साफ़ की गुहार' उनकी ही एक कविता थी, जिसे मैंने एक क़िताब में देखा था। वह क़िताब मेरे पास नहीं थी, पर मैंने उसमें कविता ज़रूर पढ़ी थी और उन्होंने जो लिखा था वह मैंने याद कर लिया था, पर उसे अपना बनाने के लिए उसे कुछ बदल डाला था। 'काले आदमी की इन्साफ़ की गुहार' मेरी पसन्दीदा कविता थी, क्योंकि वह काले लोगों से वाज़िब सुलूक के बारे में, उनके संघर्षों के बारे में थी।

काले आदमी की इन्साफ़ की गुहार

मुझे सुनो ओ राजनेताओं

गुहार लगा रहा हूँ करने हिफ़ाज़त

काले आदमी के सबब की

क्या मुझे दोगे तुम सुरक्षा

अपने कानूनों की ज़द में?
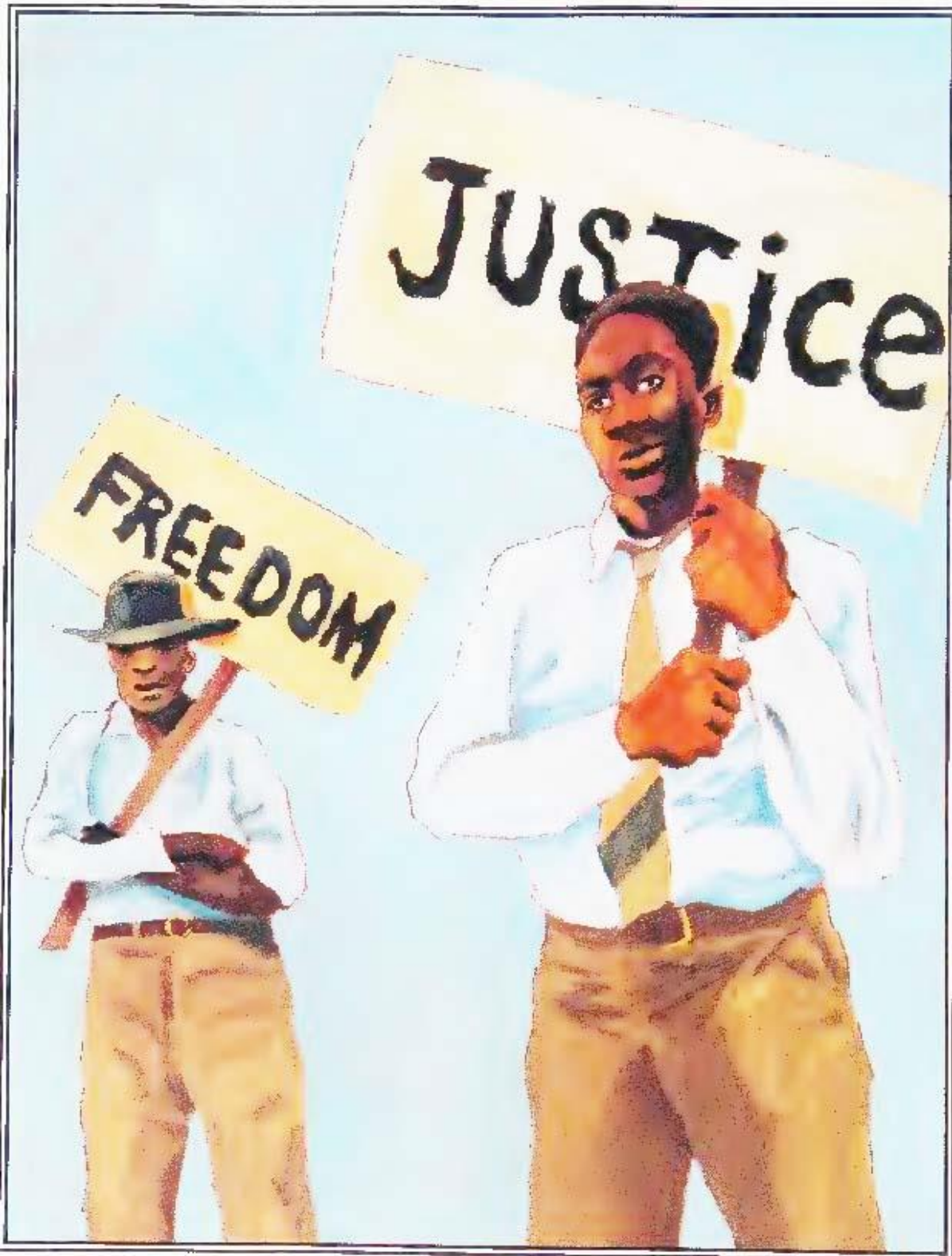
क्या लड़ेंगे तुम्हारे वकील मुकदमे मेरे
तुम्हारी अदालतों में?
मैं क्या नागरिक नहीं?
क्या स्वीकारोगे मेरा मत?
मैं देता हूँ पैसे यातायात के
तुम्हारे सभी रेल पथों पर।
करता हूँ शर्तें पूरी सारी
और चुकाता हूँ अपना कर।
जब मैं रिक्त स्थान ठीक से नहीं भर पाता
क्या तुम मेहरबानी कर सिखाओगे भरना है कैसे?
इस देश की शासक-सत्ता
क्या दोगे मुझे इन्साफ़ अब?
मैंने तैयार की दावत तुम्हारी शादी की
खोदी कब्र तुम्हारे पिता की।
किया वह सब जो तुमने कहा
महज इसलिए कि मैं था तुम्हारा गुलाम।
मदद की मैंने बनाने में तुम्हारे बड़े पुल
बिछाई इस्पात की पटरियाँ।
रहा हूँ एक ताकत
तुम्हारे विशाल वित्त चक्र में।

जब कर नहीं पाता कोई काम मैं ठीक से
सिखाओगे मुझे वह करना है कैसे?
इस देश की शासक-सत्ता
क्या दोगे मुझे इन्साफ़ अब?
जोते हैं टट्टू तुम्हारे मैंने
नियम हैं पाले।
खिलाया और दुहा है तुम्हारी गायों को
पूरा किया है हर वादा।
खुरची है गंद तुम्हारे जूतों की
चला हूँ बर्फ़ पर ले ख़बर तुम्हारी।
छूट नहीं थी हालांकि मुझे करने की इबादत
कि रखते थे सख़्त नज़र तुम मुझ पर हर-हमेश।
खटा हूँ तुम्हारे खेतों में
पकाए हैं तुम्हारे खाने।
जब कुत्ते-बिल्लियों को न पाऊँ खिला ठीक से
सिखाओगे मुझे कैसे करना है यह सब?
इस देश की शासक-सत्ता
क्या दोगे मुझे इन्साफ़ अब?

बड़े होना और आगे बढ़ना

मैंने ग्यारहवीं पूरी की। जहाँ मैं रहती थी वहाँ काले स्कूलों में बारहवीं कक्षा नहीं थी। वासकॉम में ग्यारहवीं पूरी करने पर काम करने जाना पड़ता था। मेरी मामा मुझे कहा करती थी, "जब भी उन कपड़ों को धोओ एकदम साफ़ धोना, क्योंकि हो सकता है किसी दिन तुम्हें गोरों के लिए काम करना पड़े - और अगर तुमने उन्हें झक्क-साफ़ न धोया तो वे तुम्हें काम से निकाल देंगे।" मैं उनके यह बार-बार दोहराने से बेहद थक-झींक जाती थी, क्योंकि मैंने कभी यह सोचा ही नहीं था कि गुज़ारा चलाने के लिए मुझे यह काम करना पड़ेगा। पर जब मैं बड़ी हो गई तब यही सब तो मुझे करना पड़ा, ठीक माँ और दादी के जैसे। मैं गोरों के बच्चों की देखभाल करती, उनके बरतन-भांडे माँजती, साफ़-सफ़ाई करती, इसी तरह के काम करने पड़े मुझे।

और जब मैं काम में उलझी नहीं होती तो मुझे लड़के पसन्द आने लगे, वे मुझसे मिलने आने लगे। मैं बड़ी हो रही थी। कविता में मेरी रुचि खत्म-सी हो गई। मैं बेसबॉल के खेलों और पिकनिकों पर जाती। मैं दुकान पर आइसक्रीम ख़रीदने जाती। इन सारी चीज़ों ने कविता से मेरा मन ही हटा दिया।
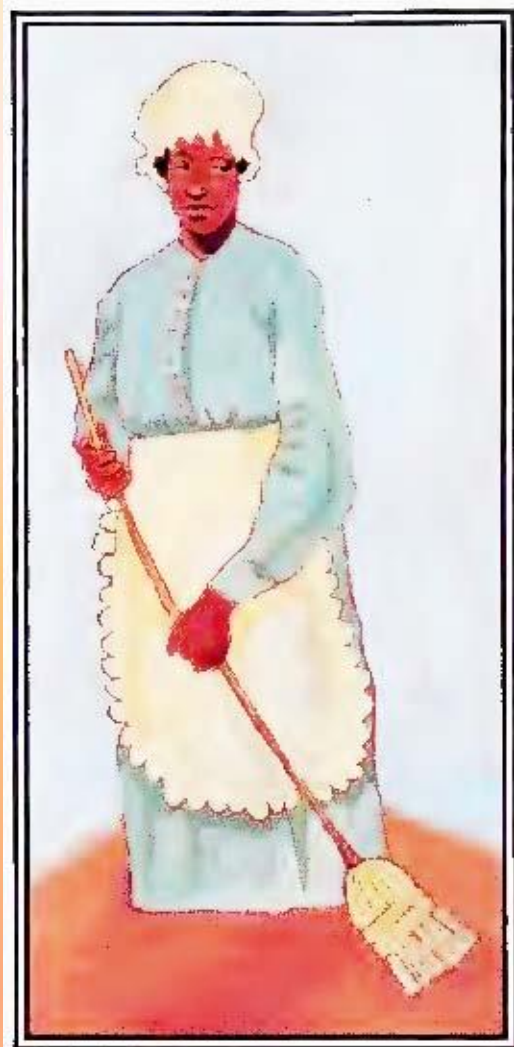
तब मैंने एक आदमी से शादी की जिसका नाम क्लैरेंस मेयस् था। वह एक मेहनती बंटाईदार था, ठीक मेरे डैडी जैसा। और उसकी एक बेटी थी लोरेथा नाम की और मैं उसकी सौतली माँ बनी। मैं उस बच्ची को अपनी ही बेटी-सा प्यार करती थी।

1945 में हमने हमेशा के लिए वासकॉम छोड़ दिया। हम बेहतर काम की तलाश में डलास चले आए। वहाँ क्लैरेंस जो कुछ कर सकता उसने किया, लॉन्ड्री में और दूसरे फुटकर काम। और मैंने बच्चों की देखभाल की और घरेलू मददगार का काम किया।

हमारी साझी ज़िन्दगी अच्छी थी। हम पचास साल तक साथ-साथ रहे। हमारी शादी की पचासवीं सालगिरह के एक महीने पहले, 20 नवम्बर 1985 को क्लैरेंस की मौत हो गई।

अब मैं निपट अकेली रहती हूँ, पर मुझे बुरा नहीं लगता। मैं गिरजे जाती हूँ, और अपने परिवार से मिलने, मतलब जो भी उसमें बचा है - लोरेथा की बेटी कैरोलाइना और उसका पति बेन और उनके बच्चे, मेरी बहन हैटी व्हाइट। एक और बहन मेमी डगलस अब भी वासकॉम में काम करती है, और एक और बहन जॉर्जिया पर्किन्स ह्यूस्टन में रहती है। डैडी के पहले परिवार में अब कोई बचा नहीं है; ये बहनें मेरी सौतेली माँ की जायी हैं।

एक खुशी छुपी हुई

साल गुज़रने के साथ मैं अपनी मामा और दादी की सुनाई कविताओं और कहानियों के बारे में खूब सोचने लगी हूँ। मैंने उन्हें कभी लिखा नहीं। जब उन्हें सीखा था तब लिखने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी। और मुझे बस एक ही पेन्सिल मिला करती थी जिसे स्कूल के लिए बचाना पड़ता था। पर मैंने खुद से वादा किया कि मैं उन्हें कभी भूलूंगी नहीं।

मुझे वह सब चीज़ें याद हैं जिनकी मेरी लिए अहमियत थी - जैसे शुक्रवार, जो स्कूल में मेरा ख़ास दिन था जब मैं अपनी कविताएं बोल कर सुनाया करती थी। मुझे वे दूसरी चीज़ें भी याद हैं, जो मेरे साथ हुईं। मैंने मुश्किलातें झेलीं, पर हर हाल में जो सबसे अच्छा कर सकती थी, किया।

मैं इन कहानियों और कविताओं को अपने साथ रखे रही और वे मुझे छुपी खुशी देती रहीं। मैं काम करते-करते उन्हें मन ही मन दोहराती। मैं उस सबके बारे में सोचती जो मामा और दादी ने कही थीं। और मैं उन कविताओं को भी याद करती जो मैं खुद बनाया करती थी। मैं अब भी खुद को यह सब सुनाती हूँ।

कभी मुझे लगता है कि मुझे कविताएं लिखना बन्द नहीं करना चाहिए था। अगर मैंने ऐसा किया होता तो अब तक मैं अच्छी कविता लेखिका होती।

एलन गवनर

एक कलाकार, फिल्म निर्माता और लोक कथाकार हैं। ऑस्किओला में दर्ज ये स्मृतियाँ सुश्री मेयस् के साथ पंद्रह वर्षों के दौरान किए गए साक्षात्कारों और बातचीतों का नतीजा है। एलन गवनर डलास, टेक्सस में रहते हैं।

ऑस्किओला मेयस्

नब्बे वर्ष की हैं, पर वे अपनी कहानी स्कूलों, लोकोत्सवों, अजायबघरों और सांस्कृतिक संस्थाओं में साझा करती हैं। वे भी डलास, टैक्सास में रहती हैं।

शेन डब्ल्यू. इवान्स

ने देश भर में विभिन्न लोगों के लिए चित्रांकन किया है। उनके चित्र पश्चिमी अफ्रीका, पेरिस, शिकागो, न्यू यॉर्क व अमरीका के अन्य प्रमुख नगरों में प्रदर्शित किए गए हैं। वे कैनसास सिटी, मिसूरी में रहते हैं।